कासा एशिया व भारतीय गणराज्य

1. कासा एशिया

कासा एशिया (एशिया भवन) विदेश मंत्रालय, कातालुन्या सरकार, बार्सेलोना नगर परिषद व फरवरी 2006 से माद्रिद नगर परिषद द्वारा बनाया गया एक सार्वजनिक संकाय है। यह संस्था बार्सेलोना में 9 नवंबर, 2001 में स्थापित की गई व "एशिया-पैसफिको प्लान मार्को 2000-2002" ("एशिया-पैसफिक 2000-2002 रूपरेखा योजना") के ध्येय ढांचे व एशिया के प्रति यूरोपीय संघ की कूटनीति का भाग है। यह योजना उस राजकीय नीति की नींव रखती है जो इस क्षेत्र में स्पेन की उपस्थिति को दृढ़ करने का लक्ष्य रखती है, क्योंकि एशिया व पैसफिक क्षेत्र स्पेन की विदेशी गतिविधियों के कूटनीतिक उद्देश्य हैं।

संकाय का मुख्य लक्ष्य है उन कार्यक्रमों व गतिविधियों का संचालन करना जो स्पेन व एशियन व पैसफिक देशों के मध्य संस्थात्मक, आर्थिक, शैक्षिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में एक बेहतर समझ व अधिक सुलभ संबंध बनाने में योगदान करें। कासा एशिया इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये उन परियोजनायों व गतिविधियों को आगे बढ़ाने व संचालन करने का एक निमित्त है जो व्यवसायिक, विश्वविद्यालय व नागरीय समाज के संसारों को साथ में शामिल करते हुये इसे इस लक्ष्य को पूर्ण करने का अवसर देते हैं।

दिलीप लाहड़ी	स्पेन में भारत के पूर्व राजदूत

"एशिया में स्पेन की लोकछवि ऐतिहासिक कारणों से महत्त्वपूर्ण नहीं रही है, अन्य बातों के साथ-साथ तोर्देसिल्यास समझौते के कारण भी। स्पेनी आर्थिक चमत्कार व इस देश की बढ़ती हुई अंतर-राष्ट्रीत उपस्थिति के चलते स्पेन का एशिया, जहाँ संसार की तीन सबसे विशाल अर्थव्यवस्थायें स्थित हैं, के साथ पारस्परिक संबंध स्तर ऊंचा करने की स्पष्ट आवश्यकता है। कासा एशिया ने इस दिशा में उत्कृष्ट कार्य की शुरुआत की है अपने प्रथम गतिशील निर्देशक, श्री योन दे ला रिवा के नेतृत्व में, जो अब भारत में स्पेनी राजदूत के पद पर कार्यरत हैं। कासा एशिया की स्थापना बिल्कुल समयानुसार थी, और इसके लक्ष्य को पूर्ण सहयोग मिलना चाहिये।"

16 जून 2003 को कासा एशिया ने बार्सेलोना में बारो दे क्याद्रा महल में अपना मुख्य कार्यालय खोला, व उस कार्यक्रम में आस्तुरियास के महामहिम राजकुमार ने अध्यक्षता की थी। 20 जून 2007 से कासा एशिया का स्पेनी राजधानी में अपना स्थान है, कासा एशिया- माद्रिद केंद्र के रूप में, जो मीराफ्लोरेस महल में स्थित है।

कासा एशिया एक वर्ष भारत को समर्पित करता है

स्पेन व भारतीय गणराज्य के बीच संबंध प्रगाढ़ करने व आपसी परिचय को बढ़ावा देने के लिये, एशिया-पैसफिक कार्य योजना 2005-2008 के मार्गदर्शन में, कासा एशिया ने वर्ष 2008 को भारत का वर्ष नामांकित किया है। यह प्रस्तावना उन सारी प्रस्तावनायों के अलावा है जो अब तक दोनों देशों के बीच रिश्ते मज़बूत करने के लिये की जा चुकी हैं।

संस्थागत स्तर पर, प्रधानमंत्री खोसे लुईस रोद्रीगेज़ ज़ापातेरो ने वर्ष 2006 में भारत की पिछले 13 साल की प्रथम सरकारी यात्रा की, भारत में स्पेन की आर्थिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक उपस्थिति को बढ़ावा देने की आशा लेकर। उनके साथ लगभग पचास स्पेनी कंपनियाँ भी यात्रा कर रही थीं, जिन्होंने दूसरी अस्सी भारतीय कंपनियों के साथ नई दिल्ली में भारत

भारतीय विदेश राज्य मंत्री आनंद शर्मा, भारत में अब नियुक्त स्पेनी राजदूत योन दे ला रिवा के साथ

स्पेन में भारतीय राजदूत, सुजाता मेहता। इनके बांये में कासा एशिया के सामान्य निदेशक, खेसुस सांज़

^ फिल्म निर्माता शेखर कपूर

उपन्यासकार विक्रम चंद्रा v

में स्पेनी निवेश को आगे बढ़ाने के लक्ष्य लिये बहुत सी द्वि-पक्षीय भेंटों में भाग लिया। इस यात्रा के भाग के रूप में मुंबई में कासा एशिया ने “भारत में स्पेन: संस्कृति व शिक्षा” नामक एक कार्यक्रम भी पेश किया, स्पेन में आयोजित उन गतिविधियों व सांस्कृतिक आयोजनों का प्रचार करने के लिये जिनका संबंध भारत से होता है।

दूसरी ओर, भारतीय विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा ने “भारत-यूरोपीय संघ संबंध” की गोल मेज़ भेंट में 2006 में भाग लिया, जो कासा एशिया में आयोजित की गई थी। शर्मा जी ने कासा एशिया द्वारा स्पेन में एशियाई देशों का परिचय बढ़ाने के लिये गये कार्य को विशिष्ट रूप से दर्शाया, और अपने देश व यूरोपीय संघ के बीच नवीकृत राजनैतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक रिश्तों का आह्वान किया।

सुजाता मेहता	स्पेन में भारत की राजदूत

देशों के बीच सबसे दृढ़ संबंध संस्कृति का होता है क्योंकि यह लोगों को समीप लाती है। स्पेन में कासा एशिया व कासा दे ला इंदिया व भारतीय सांस्कृतिक संबंध संस्था (आइ.सी.सी.आर.) जैसे सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने वाले संस्थान महत्त्वपूर्ण भूमिकायें निभाते हैं। दोनों कासा एशिया व कासा दे ला इंदिया संस्थान ऐसे मचान हैं जो दो महान संस्कृतियों के बीच संबंध स्थापित करने व संवाद करने के लिये एक मंच बनाते हैं। भिन्न-भिन्न सार्वजनिक गतिविधियाँ आयोजित करके वे हमारे दो देशों में नागरिकों व संस्थानों को साथ-साथ लाते हैं।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिये, यह योजना भिन्न-भिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करने की सोच रखती है, जैसे विषयी प्रदर्शनियाँ, पाठ्यक्रम, संपादन, फिल्म प्रदर्शन व गोष्ठियाँ जो सारे स्पेनी क्षेत्र में आयोजित की जा चुकी हैं, ख़ास तौर पर माद्रिद व बार्सेलोना में। उदाहरण के लिये, एशिया महोत्सव में, बाकी सांस्कृतिक आयोजनों की तरह (लूप 2008, इमैजिन इंडिया उत्सव, इत्यादी), भारत 2008 वर्ष का मेहमान देश रहा है। इसी तरह से अंतर-राष्ट्रीय समकालीन कला उत्सव-आर्को 2009 में भारत निमंत्रित देश है।

एशिया-पैसिफिक कार्य योजना के अंतर्गत बढ़ावा दिये गये कार्यक्रमों में सम्मिलित यह बताना भी उचित होगा कि इन्सतितुतो सेरवान्तेस भारत में अपनी उपस्थिति नई दिल्ली में एक नये परिसर से दृढ़ कर रहा है। दूसरी ओर, बार्सेलोना विश्वविद्यालय ने, कासा एशिया के सहयोग के साथ, 2005 में भारत पर विशेष तौर पर केंद्रित दक्षिण एशिया विषय एक स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम का निर्माण किया।

अंतिम उदाहरण के तौर पर, अक्तूबर 2008 में, दिल्ली में चतुर्थ स्पेन भारत ट्रिब्यून आयोजित किया गया, जो नागरिक समाज के स्तर पर स्पेन व भारत के बीच द्विपक्षीय सहयोग की एक कार्यविधि है, जो विशेष तौर पर आर्थिक, पर्यावरण संबंधी, सांस्कृतिक, शैक्षिक व तकनीक संबंधी मामलों पर केंद्रित है।

कासा एशिया व स्पेन में भारतीय संस्कृति की उपस्थिति

कासा एशिया में भारत वर्ष “रघु राय, पैसेजिस फ़्रॉम इंडिया” (“रघु राय, भारत की यात्रायें”) प्रदर्शनी से प्रारंभ हुआ, जो मैग्नम एजेंसी के फ़ोटो-पत्रकार रघु राय की आज तक की सबसे व्यापक गतावलोकी प्रदर्शनी थी। अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर सबसे प्रख्यात इस फ़ोटो-कलाकार के भारत के 93 बड़े प्रारूप के छायाचित्र प्रदर्शित किये गए थे, रंगीन व श्वेत-श्याम, उसके बहु-स्तरीय भारत के, उसके “संपूर्ण संसार, उसके प्रतिमान” को दिखाते हुए। इस प्रदर्शनी में भारत के इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण काल, 1964 से 2007 तक, के विषय पर छायाचित्र रखे गए व इस में इंदिरा गांधी, मदर टेरेसा जैसे व्यक्तित्वों या भोपाल गैस कांड जैसे विनाशों को समर्पित छायाचित्र शृंखलायें थीं, व यह दो जगहों पर दिखाई गईं: बार्सेलोना के कासा एशिया में व कासा एशिया-माद्रिद केंद्र में।

वर्ष 2008 में सिनेमा भी भारतीय संस्कृति व समाज से रिश्ता बनाने व उसे समीप लाने के लिये प्रयुक्त किये गये यंत्रों में से एक था। कासा एशिया-माद्रिद केंद्र पहली बार इमैजिन इंडिया उत्सव परिधि में आया, जो अपने सातवें संस्करण के अंतर्गत माद्रिद में 23 मई से 2 जून 2008 तक भिन्न-भिन्न स्थानों में आयोजित किया गया। यह उत्सव पहली बार बार्सेलोना में भी गया और इसे कासा एशिया के मुख्यालय में आयोजित किया गया। 2008 में इसका विषय फिल्म

प्रथम स्पेन-भारत ट्रिब्यून, 2005

लेखिका शोभा डे

राइमोन पानक्किर

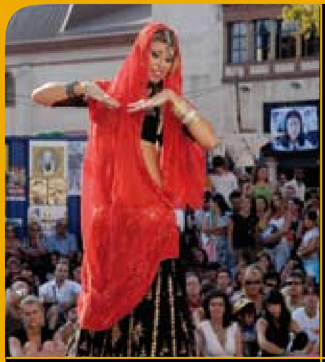

एशिया महोत्सव में भारतीय नृत्य प्रदर्शनी

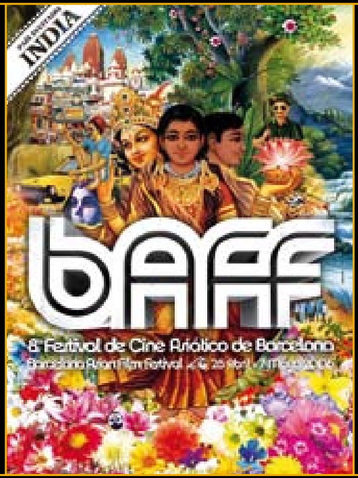

v बार्सेलोना में भारतीय पंजाबी दल

गुरु राजेन्द्र

तरुण चोपड़ा की फोटो-प्रदर्शनी

^ रघु राय

डीजे वी एशिया महोत्सव'07 में v

निर्माण में स्त्रियों की भूमिका पर केंद्रित था: निर्देशिकाओं के रूप में उनकी विचारधारायें व भारतीय समाज में बदलाव लाने वाली मोटर के रूप में उनके प्रभाव। ऐसी फिल्मों का प्रदर्शन हुआ जिन्होंने बॉलीवुड से अलग तरह का आनंद दिया, जैसे स्वतंत्र फिल्में या फिर तमिल व तेलुगु चलचित्रण।

कासा एशिया में हमेशा की तरह शनिवारों को होनी वाली फिल्म प्रदर्शन श्रृंखलायें भी भारतीय सिनेमा को विशेष सत्र समर्पित करती रहीं, जैसे “ भारतीय पैनोरामा: बंबई से दूर ”, “दक्षिण भारत की यात्रा: तमिल सिनेमा ” या फिर बच्चों के लिये बनी भारतीय अनुप्राणित फिल्में। बार्सेलोना एशियाई फिल्म महोत्सव (BAFF), जहाँ कासा एशिया सबसे श्रेष्ठ फिल्म को 6,000 यूरो के दुरियान दे ओरो पुरस्कार से सम्मानित करता है, में सबसे अधिक मांग किये जाने वाले व आयोजित किये जाने वाले चलचित्रणों के अलावा भारत BAFF 2006 में निमंत्रित देश था। अंतर-राष्ट्रीय समकालीन कला उत्सव (International Contemporary Art Fair ARCO 2008) के भाग के रूप में “भारत की एक सैर” (“A walk through India”) फिल्म चक्र के बारे में बताना उचित होगा। आर्को (ARCO) के इस संस्करण में कासा एशिया ने पहले से चलती आ रही एशियाई नक्शे (“Asian maps”) संगोष्ठी भारत को समर्पित की। इसका शीर्षक था “भारत: कॉनफ्लिक्ट्स ऑफ आइडेन्टिटि इन अ ग्लोबल वर्ल्ड बिकमिंग मोर एवरमोर ग्लोकल”, व सत्र में भारतीय कलाकार व क्यूरेटर आए, जैसे नैन्सी अदाजानिया, रंजीत होसकोटे, अल्का पांडे, सुनील गुप्ता, शिल्पा गुप्ता, रशि सिघल व चैतन्य वी. सम्ब्रानी।

अधिक समकालीन आविर्भावों के लिये बार्सेलोना में लूप (LOOP) उत्सव के छंठे संस्करण में, जो विडियो कला के पेशेवरों का वार्षिक मिलन-स्थल है, विडियो-कला का सबसे अधिक प्रतिनिधित्व करने वाले भारतीय कलाकारों को पेश किया गया।

2008 एशिया महोत्सव में, जो कासा एशिया द्वारा आयोजित एशियाई संस्कृति को समर्पित स्पेन में सबसे मुख्य उत्सव है, भारत प्रधान भूमिका निभा रहा था। इसके अलावा, पहली बार, इस उत्सव को बार्सेलोना के मुख्य उत्सव (फिएस्ता मायोर) के भाग के रूप में सम्मिलित किया गया, जिसके कार्यक्रम में ऐसे भव्य आयोजन व गतिविधियाँ थीं जिनसे भारत के कम प्रख्यात पक्ष सामने आये, जैसे अकरम खान का मूल नृत्य, जिन्हें भारत के सबसे प्रभावशाली नृत्य-संयोजकों व नृत्य निर्देशकों में गिना जाता है, राजस्थान क्षेत्र से प्राचीन संगीत व नृत्य या फिर सिदि अफ्रीकी व मुस्लिम स्रोत के भारतीय समुदायों के वंशजों की संगीत परंपरा, या फिर कातालानी व भारतीय कास्तेल्यस (इंसानी मीनारें). इस सबके साथ-साथ फिल्मों के प्रदर्शन व ठेठ भारतीय खान-पान।

कासा एशिया के सांस्कृतिक आयोजन में भारत शुरु से ही रहा है। इसका प्रमाण हैं “दिव्य उपस्थिति: भारतीय कला व हिमालय”, एक कला प्रदर्शनी जिसने बार्सेलोना में आधिकारिक रूप से बारो दे क्वाद्रास महल में कासा एशिया के मुख्यालय का उदघाटन किया, “भारत-मेक्सिको : समानांतर हवायें” प्रदर्शनी, “भारतीय परंपरायों की पवित्र कला: हिदुत्व, बौद्ध धर्म” प्रदर्शनी व “भारत: तरुण चोपड़ा के छायाचित्र” प्रदर्शनी।

स्पेन-भारत ट्रिब्यून, द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने वाला मंच

स्पेन-भारत ट्रिब्यून (अक्षरक्ष: एक किस्म की चौकी या मंच) संवाद करने के लिये एक मंच है जिसे कासा एशिया, कासा दे ला इंदिया (भारत भवन)-वायादोलिद, इन्स्तितुतो सेर्वान्तेस, नई दिल्ली व आइ.सी.डब्ल्यू.ए (Indian Council of World Affairs, New Delhi) भारत व स्पेन के नागरिक समाज के सम्मुख रखते हैं, स्पेनी व भारतीय विदेश मंत्रालयों, भारत में स्पेनी दूतावास व स्पेन में भारतीय दूतावास के सहयोग के साथ। इस प्रस्ताव, जो 2005 में प्रारंभ हुआ, का लक्ष्य है स्पेन व भारत के संबंधों के बीच अंतराल को कम करना, दोनों देशों के मध्य संवाद व सहयोग का एक मंच स्थापित करके। ट्रिब्यून वह मिलन-स्थल है जहाँ कूटनीतिज्ञ, नव-व्यवसायी, अर्थशास्त्री, विद्वान, पत्रकार, सहयोग-कार्यकर्ता, सांस्कृतिक संचालक व अन्य सामाजिक प्रतिनिधि विभिन्न मामलों पर बातचीत करने के लिये मिलते हैं।

दिलीप लाहड़ी | स्पेन में भारत के पूर्व राजदूत

“भारतीय व स्पेनी जन दोनों को अपनी अनुपमता व विश्व संस्कृति के इतिहास व विकास में दिये गये अंशदानों का दृढ़ भान है, व दोनों की अंतर-राष्ट्रीय मुद्दों में एक बड़ी व आनुपातिक भूमिका देने की अभिलाषा भी है।”

तृतीय स्पेन-भारत ट्रिब्यून, जो 16 व 17 अक्तूबर 2007 को वायादोलिद (स्पेन) में हुआ, में स्पेन व भारत के 80 जन व निजी संस्थानों के 144 भाग लेने वालों व प्रतिनिधियों ने शिरकत की। भाग लेने वाले व्यक्तित्वों में से कुछ हैं अशोक कुमार, आई.सी. डब्लू.ए (Indian Council of World Affairs) सामान्य निदेशक व भारतीय विदेश मंत्रालय (Indian Foreign Affairs Ministry) के सामान्य निदेशक; प्रकाश जी. आप्टे, आइ.आइ.एम (Indian Institute of Management), बेंगालूरु के निदेशक; एस.जे. खैतान, ऐसोचैम (Associated Chamber of Commerce and Industry, ASSOCHAM) की मैनेजमेंट कमिटी के सदस्य; या पंजाब सिंह, बनारस हिंदु विश्वविद्यालय के कुलपति।

इस भेंट के दौरान निकाले गये निष्कर्षों में मुख्य भूमिका थी उन कार्यविधियों का निर्माण करने की महत्त्वपूर्णता की जिनसे स्पेनी कंपनियों की भारत में रुचि पैदा हो, व विपरीत क्रमानुसार भी, भारत व स्पेन के बीच सीधी उड़ानों की ज़रूरत, दोनों देशों के बीच शैक्षिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना या फिर भारतीय व स्पेनी फिल्मोत्सवों को दोनों देशों में बढ़ावा देना (जैसे हुआ था भारत में स्पेनी फिल्म समारोह के दौरान, जो मार्च 2008 में दिल्ली, मुंबई व तिरुअनंतपुरम में आयोजित किया गया था), बाकि अन्य मुद्दों के साथ-साथ। इसके अलावा ट्रिब्यून में एक रिपोर्ट का लोकार्पण भी हुआ *La empresa española ante el reto de la India* (भारतीय चुनौती से जूझती स्पेनी कंपनियाँ), इस दस्तावेज को भारतीय व स्पेनी विशेषज्ञों की मदद से लिखा गया है व यह भारत में छह स्पेनी कंपनियों के सफलता भरे निवेश के मामलों का पूर्ण विश्लेषण करता है।

कासा एशिया के आर्थिक व सहयोग कार्यक्रम

आर्थिक स्तर पर, अपने आर्थिक कार्यक्रम व सहयोग विभाग के द्वारा कासा एशिया ने अपनी संस्थापना के समय से एक ऐसी गतिविधि का विकास किया है जिसका मुख्य उद्देश्य है स्पेनी व्यापार क्षेत्र को एशियाई देशों, जिनमें भारत प्रमुख है, से अपने व्यवसायिक रिश्तों व व्यवसायिक कूटनीतियों में मौजूद आर्थिक हालात, चुनौतियों व अवसरों पर पर्याप्त जानकारी उपलब्ध करवाना। इस लक्ष्य के लिये वह सारे साल गोष्ठियाँ, पाठ्यक्रम, सम्भाषण व सम्मेलन आयोजित करवाता है। कुछ उदाहरण देने के लिये, विभाग ने ये जानकारी संवर्धक व कार्य सत्रों का आयोजन किया है "भारत में निवेश के अवसर", "व्यापार अनुभव: भारत व नवरीति", "भारत में अक्षत ऊर्जा का भविष्य: स्पेनी व्यवसायों के लिये अवसर" या "भारत व सूचना तकनीक क्रांति"। इस विभाग ने, "la Caixa" (ला काइशा बैंक कंपनी) के साथ एक हैदराबाद में इंडियन स्कूल ऑफ बिज़िनेस में एमबीए करने का एक छात्रवृत्ति कार्यक्रम भी विकसित किया है।

इसी तरह से, कासा एशिया का आर्थिक कार्यक्रम व सहयोग विभाग एशिया में समकालीन आर्थिक मुद्दों से संबंधित नियमित आयोजन करता रहता है। 2004 के अपने पहले संस्करण से ही भारत वार्षिक एशिया इनोवा Innov@ सम्मेलनों में उपस्थित रहा है, "भारत में नई तकनीकों का सफलता: वास्तविकता व अवसर", "भारत व सूचना तकनीक क्रांति", "जापान, चीन, साउथ कोरिया व भारत के आर+डि नीतियाँ" जैसे विषयों के साथ, या फिर अभी हाल ही में "एशिया व नवरीति: एक स्त्रैण विचारधारा अनुसार विज्ञान व तकनीक" जैसे विषय को लेकर। अपने अनुभव बांटने वालों में थे कविल रामचंद्रन, हैदराबाद के इंडियन स्कूल ऑफ बिज़िनेस में प्राध्यापक; गणेश प्रभु, विप्रो टेक्नोलोजिस में बिज़िनेस विकास निदेशक; प्रकाश चेल्लम, बिज़िनेस विकास निदेशक, इनफोसिस टेकनोलोजिस; इंदिरा नाथ, लेप्रा LEPRA सोसायटी-ब्लू पीटर रिसर्च सेंटर (Blue Peter Research Centre) की निदेशिका व भारतीय गणराज्य सरकार के मंत्री संघ की वैज्ञानिक सलाहकार कमेटी की सदस्य; व सुरभी शर्मा, इट्स्मा-इंटरऐक्टिव टेक्नोलोजी सॉफ्टवेयर (ITSMA-Interactive Technology Software) व मीडिया असोसिएशन (Media Association) की निदेशिका व गैर-सरकारी संस्था ऐंकरेज (Anchorage) की संस्थापिका, बाकि अन्य जनों के साथ-साथ।

पंकज घेमावात	आइ.इ.एस.इ. बिज़िनेस स्कूल में ग्लोबल नीति व हारवर्ड बिज़िनेस स्कूल में बिज़िनेस प्रशासन के प्राध्यापक

कासा एशिया की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि पारस्परिक जानकारी स्तर बहुत ऊंचा नहीं है। मैं निश्चित हूँ कि उन कार्यक्रमों की सफलता, जो स्पेनी व्यापारियों को मार्गनिर्देशित यात्राओं में भारत ले जाते हैं, व विपरीत क्रमानुसार भी, एक ऐसी तरह की प्रक्रिया है जो एक ख़ास स्तर पहुँचने पर अपना आवेग खुद संभाल पाएगी व स्वयंसिद्ध हो जाएगी। फिर भी, कासा एशिया जैसे संस्थानों की एक आलोचनात्मक उपप्रेरणात्मक भूमिका है इस प्रक्रिया के कार्य करते जाने के साथ-साथ अधिक परिचित बनाने की।

WTO (डब्लू.टी.ओ.) के सहायक निदेशक वर्धन सिंह

एशिया इनोवा Innov@ 2008 गोष्ठियों के दौरान इंदिरा नाथ

पंकज घेमावातें

एशिया इनोवा Innov@ 2007 में लक्ष्मण प्रसाद

जोसेप प्रभु, कैलिफोर्निया स्टेट विश्वविद्यालय में प्राध्यापक (स.रा.अमरीका)

जोसेप प्रभु, कैलिफोर्निया स्टेट विश्वविद्यालय में प्राध्यापक (स.रा.अमरीका)

एशिया में शासन प्रणाली व शासन क्षमता संबंधित कार्यक्रम, गोवेर्नआसिया (GovernAsia), ने अपना द्वितीय बुलेटिन भारत को समर्पित किया व उसमें श्री राज कुमार प्रसाद द्वारा दिये गये भाषण को सम्मिलित किया, जो भारत के इ-शासन के कॉमनवेल्थ केंद्र के एग्ज़िक्यूटिव सलाहकार हैं, या भाषण उन्होंने डिजिटल शहरों व इ-शासन को समर्पित अपनी वार्षिक गोष्ठी में दिया था। इसके साथ-साथ, कासा एशिया ने अंतर-राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ “विकास के लिये सूक्ष्म उधार: एशिया व अफ्रीका”, जिनका उद्घाटन महामहिम रानी व मोहम्मद युनूस ने किया, जो ग्रमीण बैंक के निदेशक हैं। इन संगोष्ठियों के दौरान एम आर राव, एसकेएस माइक्रोफाइनैंन्स (SKS Microfinance) के कार्यकारी निदेशक व सारा डिमिलो, कमिटिड डेवेलपमेंट ट्रस्ट (Committed Communities Development Trust) की एग्ज़िक्यूटिव निदेशिका ने एशिया व अफ्रीक में आर्थिक विकास व गरीबी उन्मूलन पर अपने-अपने विचार प्रकट किये।

समाप्त करते हुये, हर साल कासा एशिया एशिया फोरम का आयोजन करता है, जो एक वार्षिक आर्थिक मिलन है जिसका लक्ष्य है एशिया में आर्थिक हालात का विश्लेषण, व इसमें सभी महत्त्वपूर्ण एशियाई व यूरोपीय विश्लेषकों की उपस्थिति रहती है। इस फोरम में गुरचरण दास, भारत में सिटी बैंक के सम्माननीय अध्यक्ष व प्रॉक्टर ऐंड गैंबल के पूर्व विश्व-व्यापी उपाध्यक्ष; दीपक नैयर, भारत सरकार के पूर्व मुख्य अर्थशास्त्री व वित्त मंत्रालय के स्थायी सेक्रेटरी; योगेंद्र कुमार, फिक्की (FICCI) के अध्यक्ष; वर्धन सिंह, डब्लयू.टी.ओ. (WTO) के सहायक निदेशक; बी.बी. भट्टाचार्य, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के उप-कुलपति; IESE व हारवर्ड बिज़िनेस स्कूल के प्राध्यापक पकंज घेमावात ; व अरुन माइरा, बॉस्टन कंसलटिंग ग्रुप (Boston Consulting Group) भारत जैसे भारतीय विशेषज्ञों की उपस्थिति रही है।

पूर्व-पश्चिम वार्तालाप

2004में बारसेलोना में विश्व-व्यापक फोरम के अंतर्गत आयोजित पूर्व-पश्चिम संवाद के प्रथम संस्करण के द्वारा कासा एशिया ने बारसेलोना में एक स्थायी फोरम की स्थापना करने की पेशकश की ताकि राजनैतिक, शैक्षिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों से व्यक्तित्व पूर्व व पश्चिम के बीच रिश्तों के महत्त्व से संबंधित विचारों व विचारधारायों का खुले तरीके व स्वतंत्र रूप से आदान-प्रदान कर पायें। चारों आयोजित संस्करणों में यह उद्देश्य बरकरार रहा है: संस्कृतियों के बीच संवाद के लिये व संस्कृतियों की संधि को सहयोग देने के लिये एक बुद्धिजीवी उपकरण बनना, एशिया को मुख्य मामलों जैसे अंतर-राष्ट्रीय सुरक्षा, सांसारिक शांति व विकास में अधिक भाग लेने का मौका देना। भारत के वे व्यक्तित्व जिन्होंने इस संवाद में हिस्सा लिया थे फिल्म निर्देशक शेखर कपूर, जोसेफ प्रभू, कैलफोर्निया स्टेट यूनविर्सिटी में प्राध्यापक, विशाखा एन. देसाई, एशिया सोसायटी (न्यू यॉर्क) की अध्यक्ष, शशि थरूर, लेखक व संयुक्त राष्ट्र संघ में संचार व जानकारी के पूर्व सामान्य उप-सेक्रेटरी, व उपन्यासकार विक्रम चंद्रा।

पाठ्यक्रम, सेमिनार व गोष्ठियाँ

कासा एशिया में नियमित कार्यक्रम में सेमिनारों व गोष्ठियों का एक क्रम चलता रहता है जिनके द्वारा वह एशिया व पैसिफिक क्षेत्र के इतिहास व संस्कृति पर शिक्षा व जानकारी देने का, व संचार माध्यमों की सुरखियों में आने वाले मुद्दों को अधिक गहन व विश्लेषक तरीके से समझाने का कार्य करता है। ये सत्र एशिया, स्पेन व बाकि यूरोप के विशेषज्ञों द्वारा दिये जाते हैं।

भारत की इन आभ्यासिक कार्यक्रमों में एक अहम भूमिका रही है व भारत पर कासा एशिया के इतिहास में बहुत से सेमिनार हुये हैं, विशेष तौर पर भारत को समर्पित वर्ष 2008 में। इनकी मुख्य झांकियाँ हैं शोभा डे की पुस्तक बॉलीवुड नाइट्स व आना गारसिया आर्रोयो की पुस्तक उड़ीसा: मंदिर व आदिवासी कबीले के विमोचन। दूसरे लेखक जो संस्था में आ चुके हैं वे हैं विक्रम चंद्रा, अपने अंतिम उपन्यास, सेक्रेड गेम्स, के विमोचन के लिये, विक्रम सेठ (टू लाइव्स); राइमोन पानिक्कर, कासा एशिया 2004 पुरस्कार के विजेता व एस्प्रितुआलिदाद हिंदु व दे ला मिस्तिका. एक्सपेरिएंसिया प्लेना दे ला विदा के लेखक; राफाएल आरगुल्योल व विद्या निवास मिश्र, देल गांखेस आल मेदितेर्रानेयो का लोकार्पण करते हुये या लेखिकायें सुनीति नामजोशी (फेमिनिस्ट फेब्ल्स), सनी सिंह (एल लिब्रो दे ला आबुएलिता, एल रसा: एल प्लासेर एसतेतिको एन ला इंदिया), एवा बोर्रगिरो (हिंदु. नासिओनालिस्मो रेलिखियोसो इ पोलितिको एन ला इंदिया कोन्तेम्पोरानेया) या आना मारिया ब्रिओंगोस (एस्तो एस कालकुता!)। एक अन्य महत्त्वपूर्ण विमोचन था प्रथम संस्कृत-कातालान शब्दकोश का, जिसे एनसिक्लोपेडिया कातालाना नें प्रकाशित किया व जिसे संस्कृत-शास्त्री व भारत-शास्त्री ऑस्कार पुजोल ने रचा है, जो कासा एशिया में शैक्षिक कार्यक्रम विभाग के पूर्व निदेशक रह चुके हैं व आजकल नई दिल्ली में इन्स्तितुतो सेरवान्तेस के निदेशक हैं।

पूर्व-पश्चिम संवाद का उद्घाटन समारोह

शशि थरूर कासा एशिया की सम्मान पुस्तिका पर हस्ताक्षर करते हुये

ऑस्कार पुजोल अपने संस्कृत-कातालान शब्दकोश के साथ

विशाखा एन.देसाई, एशिया सोसायटी (न्यू यॉर्क) की अध्यक्ष

भारतीय लेखक विक्रम सेठ

रुस्तम भरुचा, मुक्त लेखक, नाटक निर्देशक व सांस्कृतिक आलोचक

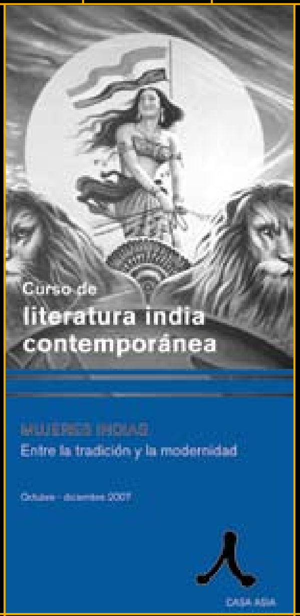

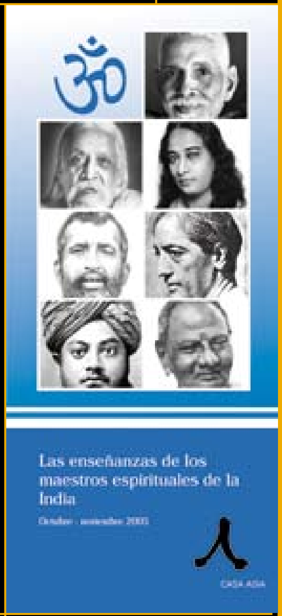

इस देश पर आधारित कुछ गोष्ठियाँ भारत के व्यक्तित्वों पर केंद्रित थीं ("अनीश कपूर: कलात्मक कार्य व सौन्दर्यबोधी विचार", आमादोर वेगा के द्वारा), आध्यात्मिकता ("हिंदु मिस्टिसिज़्म: द एक्सपीरियेंस ऑफ द हिंदु मिस्टिक्स कंपेअर्ड टु क्रिस्टियन मिस्टिक्स") काला आचार्य के द्वारा, "भारत में पवित्र स्थल", आगुस्तिन पानिक्कर के द्वारा) या फिर भारतीय उप-महाद्वीप का सामाजिक-राजनैतिक संदर्भ ("Muslims and minorities India: the challenge of secularism"), रुस्तम भरूचा के द्वारा; "द एनवायरनमेंट इन इंडिया", रामचंद्र गुहा; "इंडिया, पाकिस्तान ऐंड कश्मीर: पर्स्पेक्टिव्स फॉर पीस", वैजू नरावाने। व जैसे कलावन संस्था द्वारा आयोजित श्रंखलायें या फिर "भारतीय सोमवार" श्रंखला (यूनेस्को के मित्र संस्था के साथ-साथ सह-आयोजित), जिनसे भारत देश के कई पहलुयों को समीप से देख सकने का अवसर मिला है।

दूसरी ओर, कासा एशिया की शैक्षिक पेशकश में हिंदी व संस्कृत पाठ्यक्रम हैं, व अयंगार योग व भरतनाट्यम नृत्य के आरम्भिक कोर्स व अन्य शैक्षिक कोर्स जैसे "भारतीय आध्यात्मिक गुरुयों की शिक्षा", "भारत के बिंब: समाज, सिनेमा, नृत्य व साहित्य", "आर.के.नारायण, सलमान रुश्दी व विक्रम सेठ" या फिर समकालीन भारतीय साहित्य कोर्स "भारतीय स्त्रियाँ: परंपरा व आधुनिकता के मध्य"।

अंत करते हुये बतायें कि कासा एशिया ने अपनी शैक्षिक पेशकशों में "बांस विद्यालय" (Escuela de Bambú) शैक्षिक कार्यक्रम को भी सम्मिलित किया है। इसका ध्येय है एशियाई संस्कृति को विद्यालयों के समीप लाना व अंतर-संस्कृति को बढ़ावा देना। इस कार्य के लिये बहुत सी कार्यशालायें हैं जो एशियाई तौर-तरीकों, प्रचलित रीतियों, शहरों व त्यौहारों से संबंधित हैं ताकि सभी आयु के छात्र विविधिता को एक सकरात्मक सच्चाई के रूप में अनुभव करना सीख सकें। कुछ उदाहरण हैं "साड़ी में दिन-प्रतिदिन जीवन", "आओ भंगड़ा नाचें", "हिंदु दर्शन" या "भारतीय अर्थव्यवस्था"।

हमारे समाजों के आदान-प्रदान की एक जगह

संस्था के ध्येयों में सम्मिलित है स्पेन व भारत के बीच संबंधों के विकास व आगे करने में सहयोग देने वाली गतिविधियों व परियोजनायों को बढ़ावा देना, साथ ही साथ दोनों समाजों के बीच जानकारी का आदान-प्रदान करना। यह कार्य नयी शताब्दी के समाज पर नज़र बिठाकर संस्थागत, आर्थिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक स्तर पर किया जाता है। इस कारण से, www.casaasia.eu एक डिजिटल वेबपेज मंच बनाया गया है जो एशिया व पैसिफिक से संबंधित विश्व-व्यापी संदर्भ प्रदान करता है, जिस में औसतन 500,000 पृष्ठ हर महीने में देखे जाते हैं। इसके अलावा, यह सामग्री तीन भाषायों में प्रकाशित की जाती है: स्पेनी, कातालान व अंग्रेज़ी में। अन्य सेवायों में यह सेवा भी दी जाती है: 100 से अधिक अनुभागों का दैनिक नवीनीकरण, हमारे अपने सृजन के समारोहों के 30,000 रिकार्ड, 10,000 से अधिक पंजीकरणों के साथ एशिया पर नये बुलेटिन (गतिविधियाँ, वर्तमान मुद्दे व अर्थ-व्यवस्था), विशेषज्ञों, छात्रवृत्तियों, नौकरियों, व्यापारिक संसाधनों वगैरह से संबंधित 15,000 से अधिक कड़ियाँ लिये डेटाबेस।

बार्सेलोना में कासा एशिया का मुख्यालय, आधुनिक बारो दे क्वाद्रास महल, शहर की जीवंतता का मानक बन चुका है। एक साल में 800 से अधिक गतिविधियों के साथ, कासा एशिया में हर दिन औसतन 500 लोग आते हैं जो इसकी सेवायों का आनंद लेते हैं। इन सेवायों में एक संचार माध्यमों की संग्रहालय है, व 10,000 से अधिक शीर्षक लिये एशिया व पैसिफिक पर केंद्रित मलटीमीडिया दस्तावेजी केंद्र है : जिनमें से 6,000 कागज़ पर हैं -विविध भाषायों में, सारी शैलियों में, उपन्यास, यात्रा-गाइड, कॉमिक या बाल-साहित्य मिलाकर-, एक विडियो लाइब्रेरी है जिसमे 2000 डीवीडी हैं, साथ में एक समाचार-पत्र लाइब्रेरी व एक श्रव्य लाइब्रेरी जिसमें 2,000 संगीत सीडी हैं (ऐलेन दानिएलु लाइब्रेरी को मिलाकर), यह केंद्र सारे एशियाई महाद्वीप के देशों का प्रतिनिधित्व करता है। एशियाई कला के लिये एक प्रदर्शन कक्ष भी है; टेगौर ऑडिटोरियम, जहाँ सेमिनार व गोष्ठियाँ आयोजित की जाती हैं; साथ हैं इनफोएशिया (InfoAsia) जानकारी केंद्र; सार्वजनिक व निजी समारोहों का आयोजन करने के लिये समारोह कक्ष, कार्यशालायों के लिये लेक्चर-कमरे व हॉल; व एक बार-रैस्टोरेंट।

माद्रिद में कासा एशिया

कासा एशिया ने माद्रिद में अपनी गतिविधि 2005 के अंत में प्रारंभ की कोंदे दुके बैरेक्स में कुछ अस्थायी दफ्तरों में। इस प्रस्तावना का रूप माद्रिद नगर निगम व प्रोमोमाद्रिद के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर करने से बना, जिसमें इन संस्थानों के साथ एक सहयोग ढांचा स्थापित किया गया, जिनका स्पेन व एशियाई व पैसिफिक देशों के मध्य राजधानी में बेहतर आपसी समझ व रिश्ते बढ़ाने के लिये रत परियोजनायों व गतिविधियों आयोजित करने का सहभागी ध्येय है।

कासा एशिया,बार्सेलोना

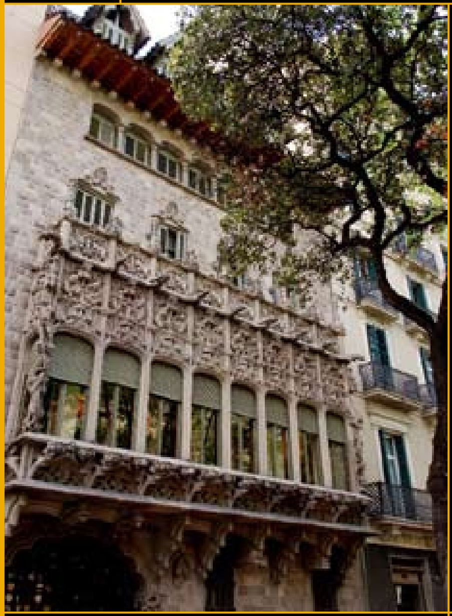

कासा एशिया,बार्सेलोना

कासा एशिया-माद्रिद केंद्र

कासा एशिया-माद्रिद केंद्र

2007 में जब माद्रिद नगर निगम कासा एशिया को प्रशासित करने वाले सार्वजनिक संकाय का हिस्सा बना, तब कासा एशिया का स्पेनी राजधानी में अपना स्थायी स्थान बनाया गया: मीराफ्लोरेस महल के अंदर स्थित कासा एशिया-माद्रिद केंद्र। उस समय से शहर में इसकी गतिविधियों में बढ़ावा हुआ: उसके लेक्चर कमरों में कनफ्यूशियस इन्सटटि्यूट स्थापित करने के करार पर हस्ताक्षर हुये, साथ ही साथ हिंदी भाषा व बॉलीवुड व भरतनाट्यम नृत्य कक्षायें, गोष्ठियाँ पुस्तक-विमोचन, एशियाई फिल्म की श्रृंखलायें, इमैजिन इंडिया फिल्म प्रदर्शन हुये, एक 110 वर्गमीटर के प्रदर्शनी-कक्ष स्थापित हुआ व "स्पेनी व्यापारों के भारत में अनुभव" जैसे कार्य-नाश्ते के आयोजन हुए। केंद्र में एक संचार-माध्यम लाइब्रेरी भी है, जो बार्सेलोना में स्थित संचार माध्यम लाइब्रेरी को पूर्ण करती है।

मीराफ्लोरेस महल के बाहर कासा एशिया बहुत से संस्थानों के साथ सहयोग में व सह-आयोजन में गतिविधियाँ करता रहा है। उदाहरण के लिये: इसने एशियन डवेलपमेंट बैंक के 41वें मिलन में भाग लिया, जो माद्रिद में प्रथम बार किया गया, एशिया में मौजूद स्पेनी कंपनियों के कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पर एक सेमिनार के द्वारा या अंतर-राष्ट्रीय गोष्ठियों जैसे "विकास के लिये सूक्ष्म उधार: एशिया व अफ्रीका" के द्वारा।

स्पेन में कासा एशिया

अधिकतर स्वायत्त समुदायों में कासा एशिया गतिविधियों के एक कार्यक्रम के रूप में उपस्थिति है। इससे उन स्पेनी शहरों में अधिक उपस्थिति को बढ़ावा मिला है जिन्होंने एशिया व पैसफिक संबंधी शैक्षिक या जानकारी से जुड़ी गतिविधियों को आयोजित करने में या उनमें सहयोग दिया है। इसी प्रकार, कासा एशिया को सांस्कृतिक कूटनीति के प्रतिपादक के रूप में बढ़ावा देने का एक ध्येय है। कासा एशिया-माद्रिद का शिक्षा व दस्तावेज संबंधी केंद्र के रूप में खुलना एशिया के बाकि स्पेन में प्रदर्शन की ज़रूरत को दर्शाता है, जो कि भविष्य में वालेंसिया, बास्क देश या गालिसिया में भी किया जा सकता है। वालेंसियाई समुदाय की एक एशिया-पैसफिक संस्था बनाने की योजना है, बास्क देश में गिपुज़कोआ व्यापार संघ ने एशिया से जुड़ी गतिविधियों का एक क्रम आरंभ किया है।

2. भारतीय गणराज्य के लिये स्पेन में आकर्षण

स्पेन, ठोस अर्थ-व्यवस्था वाला देश

स्पेनी अर्थ-व्यवस्था, जो यूरोपीय संघ से पूर्ण रूप से मिली हुई है, ठोस आधार पर बनी है, व इसका राष्ट्रीय सकल उत्पाद (GDP) विकास दर पिछले कुछ सालों से यूरोपीय औसत से ऊपर ही है। इस कारण से स्पेन को ऊपर चढ़ने का अवसर मिला है व यह संसार की आठवीं सबसे महत्त्वपूर्ण अर्थ-व्यवस्था बन गया है व छठा सबसे महत्त्वपूर्ण निवेशक (दक्षिण अमरीका में दूसरा)।

पर्यटन (यह फ्रांस के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा गंतव्य स्थान है) स्पेन के शक्तिशाली व्यापार क्षेत्रों में से एक है। 2007 में इस देश में अंतर-राष्ट्रीय पर्यटन से कुल 51,1 बिलियन यूरो की आमदनी हुई व लगभग 60 मिलियन विदेशी पर्यटक यहाँ आये। इसके अलावा अन्य क्षेत्र भी हैं जैसे बैंक, दूरसंचार व सामान्य तौर पर सेवा क्षेत्र। जहाँ तक ऊर्जा क्षेत्र का संबंध है, तो देश ने हाल ही में नवीकरणीय ऊर्जा उपयोग में प्रतिबद्धता दिखाई है, संसार में उन तीन देशों में सम्मिलित होकर जो सबसे अधिक वायु-ऊर्जा बनाते है। स्पेनी अर्थ-व्यवस्था संसार में सबसे मुक्त अर्थ-व्यवस्थाओं में से एक है, व दूसरे देशों से इसका बहुत शक्तिशाली आदान-प्रदान चलता है व दक्षिण अमरीका व यूरोप में स्पेनी कंपनियों की मुख्य उपस्थिति भी है, व संयुक्त राज्य अमरीका व एशिया में भी यह उपस्थिति बढ़ रही है।

रामा वेलामूरी | आ.इ.एस.इ. बिज़िनेस स्कूल में उद्यमवाद के प्राध्यापक

स्पेन संसार के सबसे अग्रगामी औद्योगिकृत देशों में से एक है जहाँ बहुत से उद्योगों में नवीनतम तकनीकें व श्रेष्ठ प्रतियोगितात्मकता है। मेरे 1983 में यहाँ आने के बाद पिछले 25 सालों में देश का रूप बदल चुका है। 1980 के दशक के आरंभ में पीछे रहने वाले देश से अब यह सारे यूरोप की सबसे आधुनिक व उत्फुल्ल अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन चुका है।

बार्सेलोना बंदरगाह व डब्ल्यू.टी.सी.(WTC)

वायु ऊर्जा

आवे (AVE), उच्च रफ्तार ट्रेन

गगनहाइम संग्रहालय, बिलबाओ

कला व विज्ञान नगर, वालेंसिया

स्पेनी मदिरा (वाइन)

पाएल्या

फल बाज़ार

ज़ारा (Zara)

बार्सेलोना फैशन सप्ताह

गोल्फ कोर्स

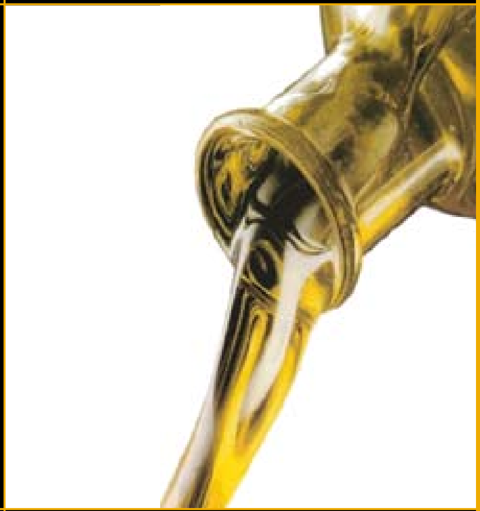

वर्जिन जैतून तेल

स्पेन यूरोप का तृतीय सबसे महत्त्वपूर्ण कार बनाने वाला देश है, जर्मनी व फ्रांस के बाद। स्पेनी फैशन प्रधान (जैसे कुस्तो, ज़ारा, मैंगो, उदाहरण के लिये), व खाद्य-उत्पाद कंपनियों (फ्रेशेनेत, पास्कुआल या तोर्रेस) ने पिछले कुछ सालों में अपने आकार बड़े कर लिये हैं व इनकी उपस्थिति अंतर-राष्ट्रीय बाज़ारों तक फैल गई है। इसके अलावा, स्पेन दुनिया का सबसे उच्च जैतून तेल निर्माता है व वाइन का एक महत्त्वपूर्ण निर्माता भी, अंतर-राष्ट्रीय रूप से प्रख्यात गुणवत्ता को हासिल करते हुये।

एक निश्चित निवेश

भारतीय सूचना तकनीक कंपनियाँ, जैसे इनफोसिस, टीसीएस, सत्यम या विप्रो, जिन्होंने अब तक अपनी गतिविधियाँ अंग्रेज़ी बोलने वाले बाज़ारों तक चलाई हैं, स्पेन में काफ़ी बहुत रोचक मंच पा सकती है अपनी सेवायें स्पेनी कंपनियों या फिर दक्षिण अमरीकी बाज़ार तक पहुँचाने के लिये।

इसी तरह से, स्पेन सारे क्षेत्रों की उन भारतीय कंपनियों के लिये अच्छा प्रवेश द्वार है जो दक्षिण अमरीका व अफ्रीका में प्रवेश करना चाहती हैं। दक्षिण अमरीका के मामले में, स्पेन में बैंक, दूरसंचार व ऊर्जा कंपनियों का एक जाल है जिन्हें भारतीय निवेशक उपयोग में ला सकते हैं। इसके अलावा, स्पेन उन बड़े भारतीय उद्योग दलों के लिये एक अच्छा व्यापारिक बिंदु बन सकता है जो यूरोपीय बाज़ार में विस्तार करना चाहते हैं। वास्तव में, स्पेनी औद्योगिक क्षेत्र में पहले भारतीय निवेश आरंभ हो चुके हैं, हालांकि इनके आकार अभी इतने विशाल नहीं हैं।

स्पेन: विविध लोगों की एक पच्चीकारी, संसार में अनुपम

स्पेन में आने वाले आगंतुकों को अंतर-राष्ट्रीत ख्याति प्राप्त स्थानों, जगहों या कलात्मक व ऐतिहासिक भवन जैसे सांतियागो गिरिजाघर, ग्रानादा में आलांब्रा या फिर सालामांका व तोलेदो शहर देखकर आनंद लेने का अवसर मिलता है। वास्तव में स्पेन वह देश है जिसमें संसार में सबसे अधिक स्थान यूनेस्को द्वारा 'विश्व धरोहर स्थल' (World Heritage Sites) नामकरण पा चुके हैं (2007 में 40 सांस्कृतिक व प्राकृतिक जगहें)। पर सांस्कृतिक खज़ानों के अलावा, जो आगंतुकों को समय में पीछे व स्पेन के इतिहास में ले जाते हैं, यहाँ समकालीन कलात्मक प्रदर्शन भी देखे जा सकते हैं, अधिक समीप से व अधिक जीवटता से। इस संदर्भ में, एक मुख्य उदाहरण है वास्तु-कला में एक विश्व-व्यापी व्यक्तित्व की प्राकृतिक व मूलभूत श्रेष्ठता, आन्तोनियो गाउदी, जो कातालानी आधुनिकवाद के एक महान गुरु थे। उनका अंदाज़ निजी था व कल्पना से भरपूर, और जब उन्होंने शुरुआत की, तो पूर्वी कला से प्रभावित होकर की, एक ऐसी वास्तु भाषा की तलाश में जो उनके काम में वे रूप ले सके जिन्हें वे प्रकृति में देखते थे।

सनी सिंह	उपन्यासकार व पत्रकार

"भारतीय व स्पेनी जन दोनों को अपनी अनुपमता व विश्व संस्कृति के इतिहास व विकास में दिये गये अंशदानों का दृढ़ भान है, व दोनों की अंतर-राष्ट्रीय मुद्दों में एक बड़ी व आनुपातिक भूमिका देने की अभिलाषा भी है।"

सुजाता मेहता	स्पेन में भारत की राजदूत

जीवन के हर पक्ष का मान करने का स्पेनी तरीका व जीवन में पूर्ण रूप से आनंद लेने का प्रयास करना जीने में चार चांद लगा देता है। यहाँ के जीवन में शांति व स्थिरता, मज़बूत पारिवारिक संबंध, बच्चों, माता-पितायों व दादा-नानों से भरे उद्यान, नागरीय जीवन की उच्च गुणवत्ता, – ये स्पेन में रहने के अनगिनत आनंदों में से कुछ थोड़े से ही हैं।

पर स्पेनी शहर केवल ऐतिहासिक सौंदर्यों पर ही नहीं जीते, वे जीते हैं समकालीन प्रतिभायों के सृजन कार्यों पर भी। गाउदी ने बार्सेलोना नगर को 19 वीं सदी के अंत से 20 वीं सदी के पहले कुछ दशकों तक सजाया। पिछली सदी का अंत होते-होते बाकि कलाकारों व पेशेवरों ने वह भार संभाला व अपनी सृजनात्मकता व प्रतिभा से वे भविष्य के स्पेनी शहरों को सजाने में सहयोग कर रहे है। बिलबाओ में फ्रैंक गेहरी द्वारा बनाया गगनहाइम सग्रहालय, बार्सेलोना में ज्याँ नूवेल द्वारा एगबार भवन या वालेंसिया में सांतियागो कालात्रावा द्वारा सिटी ऑफ आर्टस ऐंड साइंस जैसी परियोजनायें आधुनिक वास्तु-कला के उत्तम उदाहरण हैं।

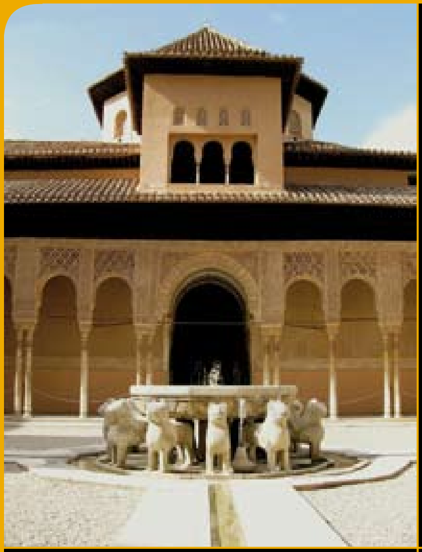
आलाम्ब्रा, ग्रानादा

फ्लामेंको

कादाकेस

कासा आमेत्ल्येर व कासा बात्ल्यो, बार्सेलोना

तोलेदो

एगबार मीनार, बार्सेलोना

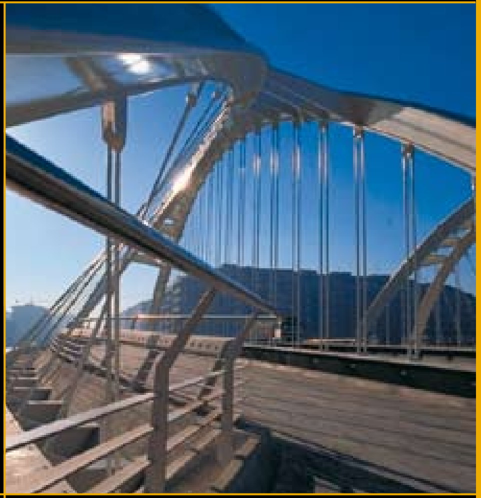
सांतियागो कालात्रावा का पुल

स्पेन व कला, परंपरा वादियों व अग्रगामियों का संगम

स्पेनी शास्त्रीय कला के महान संदर्भिक कलाकार, जैसे गोया, वेलाज़केज़, एल ग्रेको या सोरोल्या के कार्यों से उत्पन्न रुचि काफ़ी प्रख्यात है। इसका एक लक्षण है उन संग्रहालयों में उच्च संख्या में आगंतुकों का आना जिनमें इन कलाकारों के कार्य संरक्षित हैं, जैसे माद्रिद में प्रादो संग्रहालय, रेइना सोफिया राष्ट्रीय कला संग्रहालय या फिर थिसेन-बोर्नेमिज़ा संग्रहालय। फिर भी, स्पेन मे ऐसे कलात्मक प्रदर्शन होते रहे हैं जो आधुनिक व समकालीन कला में संदर्भ बन गये हैं। हरेक कलात्मक विशिषता में हमें एक उतकृष्ट उदाहरण मिलता है: चिल्लियदि की मूर्तिकला, पिकासो, दाली या तापिअस के चित्र या फिर मारिस्काल के प्रारूप, सब स्पेनी कलाकारों की नवीनतायों व सृजनात्मकता के नमूने हैं।

काज़ी अब्दुर रहीम	इमैजनिइंडिया उत्सव के निर्देशक
मैं स्पेन के संग्रहालय व यहाँ के फिल्म प्रशंसकों के गुंजायमान परिदृश्य की सिफारिश करूंगा; इस परिदृश्य में बड़े, नये निर्देशक हैं, जो झुकाव के विपरीत जोखिम भरी फिल्में बना रहे हैं। व साहित्य, बेशक, दक्षिण अमरीका के साहित्य के साथ-साथ।	

रघु राय	छायाचित्रकार
“स्पेन में कला उनके शहरों की गलियों में मनाई जाती है, जहाँ हर कोई कला के सुंदर कार्यों की बगल में सैर करने का आनंद लेता है।”	

स्पेनी कला से जुड़े एक भावनात्मक व कल्पना से भरे कलात्मक प्रदर्शन फ्लामेंको में अंतर-राष्ट्रीय सार्वजनिक रुचि भी काफ़ी प्रख्यात है। यह भी कहा गया है कि कांते खोंदो की विषाद भरी ध्वनि व फ्लामेंको नृत्य संचालन के रूप कुछ एशियाई देशों की लोक-कलायों के कुछ भाव बांटते हैं। फ्लामेंको का स्रोत भारत तक जाता है, फारस से होते हुये व उत्तर अफ्रीका के अरबी-मुस्लिम देशों से प्रभाव ग्रहण करता है।

स्पेन, एक विश्वव्यापी भाषा वाला देश

स्पेनी मैन्डरिन चीनी के बाद संसार की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है व अंग्रेज़ी के बाद दूसरी सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली। स्पेनी साहित्य में व्यापक लेखक व कार्य हैं जैसे सेर्वान्तेस की रचना दोन किख़ोते या फेदेरिको गार्सिया लोर्का की कवितायें व नाटक।

स्पेनी भाषा चार भारतीय विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है: अंग्रेज़ी व विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, पुणे विश्वविद्यालय व राजस्थान विश्वविद्यालय। हालांकि भारत में केवल एक दर्जन ही हिस्पानी-शास्त्री हैं, अधिक से अधिक संख्या में ऐसे छात्र हैं जो स्पेनी भाषा से आकर्षित वहाँ यात्रा करने जाते हैं। स्पेनी की जानकारी दक्षिण अमरीकी देशों के साथ संबंध बनाने के लिये भी मूल्यवान समझी जाती है। दूसरी ओर, भारत में हमारी भाषा के अध्ययन के कारण केवल अर्थ-व्यवस्था या शोध से ही नहीं जुड़े बल्कि स्पेनी बोलने वाले देशों के संगीत, कलायों या वास्तु-शास्त्र पर जानकारी प्राप्त करने से भी जुड़े हैं।

2007 के अंत में या 2008 की शुरुआत में नई दिल्ली में ऑस्कार पुजोल, कासा एशिया में शैक्षिक कार्यक्रमों के पूर्व निदेशक, द्वारा निर्देशित किये जाने वाले इन्स्तितुतो सेरवान्तेस का खुलना मुख्य तौर पर स्पेनी भाषा में इसी रुचि का उत्तर देता है। इसके अलावा स्पेन में अन्य भाषायें भी पाई जाती हैं जैसे कातालान, गालसियाई, बास्क, व इनके भिन्न प्रकार (बाबले, आरानी, वालेंसियाई या फिर बास्क भाषा की भिन्न उपभाषायें) भी।

भूमध्य सागरीय खान-पान का देश स्पेन

स्पेन उन देशों में से एक है जो प्रशंसनीय भूमध्यसागरीय खान-पान के प्रति निष्ठावान होने का गौरव कर सकते है: यह सेहतमंद है व भारतीय स्वाद के लिये बहुत आकर्षक है। अन्य कारणों के अलावा, मछली, घोंघे, चावल व सब्ज़ियों की मुख्य भूमिका होने के कारण से। विशेष आकर्षण हैं तापास , जो कम राशि में खान-पान की पेशकश होते हैं, वे मिले-जुले उत्पाद जो आम तौर मेज़ पर बैठे लोग आपस में मिल-बांट कर खाते है। जैतून तेल व वाइन की बात करना भी उचित होगा,

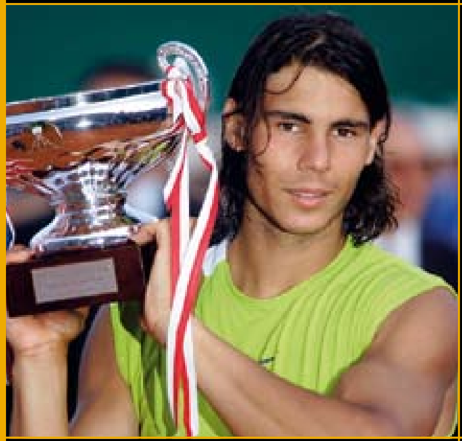

राफा नादाल

आलबेर्तो कोन्तादोर

फेर्नान्दो आलोन्सो

स्पेनी राष्ट्रीय फुटबाल दल

पाउ गासोल

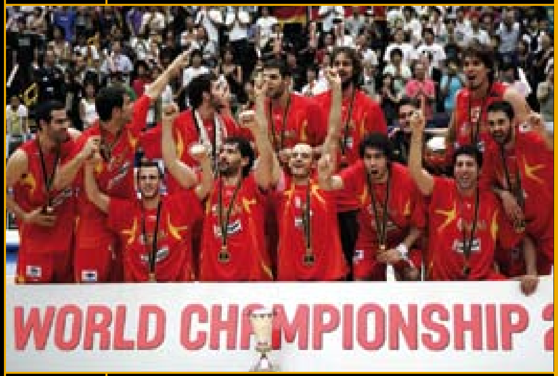

स्पेनी राष्ट्रीय बास्केटबाल दल

विश्वनाथन आनंद	आनंद, शतरंज मास्टर

स्पेन एक ऐसा देश है जहाँ खाना गंभीर मामला है। भारत की तरह यहाँ खान-पान प्रांत से प्रांत में बदलता है। मुझे यहाँ के ठेठ खाने जैसे गाज़पाचो व तोर्तिल्या एसपान्योला आनंद देते हैं। मुझे बढ़िया सागरीय खाना पाएल्या या आर्रोज़ कोन बोगावांते से प्यार है। पर जो मुझे पसंद है वो है इनके शोरबे, जो मेरे अनुसार एक बरतन में सिमटा पूर्ण खाना हैं।

खास तौर पर वह वाइन जिसका स्रोत ला रियोखा व रिबेरा दे दुएरो में निश्चित बताया जाता है। दूसरी ओर, स्पेनी रसोइयों ने योग्य होने के कारण अपना नाम सारी दुनिया में प्रख्यात कर रखा है, दोनों अग्रगामी (फेर्रान आद्रिया, खोसे आन्द्रेस) व कुछ आधुनिक भाव के साथ अधिक पारंपरिक (खुआन मारिया आरज़ाक या कार्मा रुसकाल्येदा) ने भी।

स्पेन, विश्व खेल – कूद में अग्रणी

स्पेनी खेल-कूद, जो संसार में प्रख्यात हैं, अपने यशस्वी काल से गुज़र रहे हैं: सभी टेनिस खिलाड़ी राफाएल नादाल, एनबीए बास्केटबॉल खिलाड़ी पाउ गासोल, साइकिल खिलाड़ी आलबेर्तो कोन्तादोर या फोरमूला वन चालक फेर्नान्दो आलोन्सो के नामों से परिचित हैं। हमारे फुटबाल क्लबों का अंतर-राष्ट्रीय प्रदर्शन इसका एक प्रमुख कारण है, विशेष तौर पर रेआल माद्रिद या एफ सी बार्सेलोना, व हमारा बास्केटबॉल दल भी, जिसने हाल ही में ही विश्व प्रतियोगिता जीती है। स्पेनी राष्ट्रीय फुटबाल दल की विशेष तौर से बात करना उचित रहेगा, जिन्होंने यूरो कप जीता है।

विश्वनाथन आनंद	आनंद, शतरंज मास्टर

स्पेन खेल-कूद के अपने सबसे महत्त्वपूर्ण सालों में से एक जी रहा है। राफाएल नादाल का अंक 1 बनना, स्पेन का फुटबाल में विजयी होना। पाउ गासोल के साथ ओलंपिक में। इनकी खेल-कूद में रुचि सामान्य तौर पर बहुत ऊंची है, और इस वर्ष लगता है कि इन्होंने वास्तव में ही काफ़ी खेलों में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है।

स्पेन, एक ऐसा देश जो भविष्य की ओर देखता है

आधुनिकीकरण के प्रति एक स्पष्ट प्रतिबद्धता रखते हुये स्पेन में तकनीकी शोध, विकास व नवीकरण को बढ़ावा देने के लिये लक्षित आर्थिक संसाधन काफ़ी बढ़ चुके हैं। विज्ञान व नवीकरण मंत्रालय की रिपोर्टों के अनुसार वर्ष 2004 से 2008 तक तकनीक शोध व विकास व नवीकरण बजट 164% से अधिक बढ़ा व इससे एक नयी राष्ट्रीय तकनीकी शोध, विकास व नवीकरण योजना 2008-2011 बनाई गई ताकि सार्वजनिक कंपनियों व केंद्रों के बीच व भिन्न-भिन्न प्रशासनिक विभागों के मध्य नीतियों के सहयोग को बढ़ावा मिले, स्वास्थ्य, बायोतकनीक, मौसमी बदलाव, तकनीक, ऊर्जा, दूरसंचार, जानकारी समाज, नैनोविज्ञान व नैनोतकनीक जैसे क्षेत्रों में केंद्रित करके। यह असाधारण आर्थिक कोशिश उस इच्छा के साथ जोड़ी गई है जो शोध की गुणवत्ता में गुणात्मक छलांग लगानी चाहती है व शोध दलों की प्रभावी संख्या बड़ाना चाहती है।

समाज की आर्थिक उन्नति व विकास ने परिवहन की आधारभूत संरचना में बेहतरी की भी मांग रख दी है। उच्च-रफ़्तार रेलमार्गों से जुड़ा उच्च-क्षमता रेल-जाल विस्तार करता जा रहा है। दूसरी ओर, स्पेन अंतर-राष्ट्रीय जल-मार्ग परिवहन में एक प्रमुख स्थान है व इसकी बंदरगाह व्यवस्था माल-असबाब के आयात व निर्यात का मुख्य मार्ग है। इसी कारण से, व बंदरगाहों में अधिक आवागमन की वजह से इनमें से मुख्य बंदरगाहों का आधुनिकीकरण किया जा चुका है और वे अधिक सेवायें देते हैं।

इसी तरह से, माद्रिद, बार्सेलोना व वालेंसिया के हवाई अड्डों का विस्तार यात्री उड़ानों की अधिक संख्या के कारण किया गया है। वैसे तो घरेलू परिवहन जाल में बेहतरी की गई है पर विशेष तौर पर अंतर-राष्ट्रीय परिवहन से संबंधित आधारभूत सुविधाओं को सुधारा गया है। आज स्पेन संसार से अधिक व बेहतर तरीके से जुड़ा है, अपने सारे इतिहास की तुलना में।

स्पेन व भारत के बीच निश्चय ही बहुत से पक्ष एक समान हैं। यह एक मिली-जुली समझ व पारस्परिक सांस्कृतिक संमोहन पर आधारित रिश्ता है जो खिलता रहा है व दृढ़ हो गया है। भारत व स्पेन एक ऐसे समाज का प्रतिरूप बांटते हैं जो मज़बूती से नवीनीकरण के पथ पर भविष्य की ओर जा रहा है, अपने इतिहास पर से नज़र बिना हटाये। दोनों समाज अपने इतिहास व वर्तमान , परंपरा व अग्रगामी-भाव को सम्मिलित करने के महत्त्व को जानते हैं ताकि भविष्य की नयी चुनौतियों का सामना किया जा सके।

स्पेन, रहने व काम करने के लिये एक सुरक्षित देश, आधुनिक, परंतु अपनी परंपरा पर गर्वित, सर्वदेशीय व स्वागत करता हुआ: जीने की कला

कासा एशिया

उच्च-स्तरीय संरक्षक 2008

भारत में स्पेनी राजदूत
12, Prithviraj Road
110 011 Delhi
embespin@mail.mae.es

वदिश व सहयोग मंत्रालय स्पेन (MAEC)
Torres Agora Building
26, Serrano Galvache, St.
28071 Madrid
www.maec.es

प्रोमोमाद्रदि (PromoMaDrid)
34, Suero de Quiñones, St.
28002 Madrid
www.promomadrid.com

वदिश व्यापार संस्थान, स्पेन (ICEX)
14, Paseo de la Castellana
28046 Madrid
www.icex.es

तूरएस्पान्या (TurEspaña)
6, José Lázaro Galdiano, St.
28701 Madrid
www.tourspain.es

CASA ASIA

कासा एशिया
Palau Baró de Quadras
373, Diagonal, Ave.
08008 Barcelona
T: 93 238 73 37

मुख्यालय
371, Diagonal, Ave.
08008 Barcelona
T: 93 368 03 20
F: 93 368 03 33

कासा एशिया-माद्रदि केंद्र
Palacio Miraflores
15, San Jerónimo, St.
28014 Madrid
T: 93 368 03 20
F: 93 368 03 33

www.casaasia.eu casaasia@casaasia.es

Diseño y Maquetación: IngoGroup